Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886| Web of Science ResearcherIDJTT-1295-2023
Vol. 17 Issue 11, Nov- 2022
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

श्री रविन्द्रनाथ टैगोर जी के शिक्षा दर्शन का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में योगदान का एक अध्ययन

Dr. Rajesh Kumar, Assistant Registrar,

Shri Vishwakarma Skill University Palwal Haryana

सारांश

शिक्षा तथा मानव जाति का जन्म जन्मांतर का सम्बन्ध है। शिक्षा आंतरिक बुद्धि तथा विकास की कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है और इसकी अवधि जन्म से मृत्यु तक फैली है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ मनुष्य को मानव बनाना तथा जीवन को प्रगतिशील, सांस्कृतिक तथा सभ्य बनाना है। शिक्षा द्वारा मानव अपने विचार शक्ति तथा तर्क शक्ति, समस्या समाधान तथा बौद्धिकता, प्रतिभा तथा रूझान, धनात्मक भावुकता तथा कुशलता और अच्छे मूल्यों तथा रूचियों को विकसित करता है। इसी कारण कहा जाता है कि शिक्षा व दर्शन का घनिष्ट सम्बन्ध है, क्योंकि दर्शन का अर्थ भी वास्तविकता की खोज या सत्य की तलाश करना है। दर्शन विचार प्रदान करता है और शिक्षा उन विचारों को मूर्त रूप प्रदान करती है।

श्री रविन्द्र नाथ टैगोर जी का जीवन परिचय

रविन्द्रनाथ टैगोर मानवता के पैगम्बर थे। उनके हृदय में मानव मात्र से प्यार था। भारत के प्राचीन बौद्धिक विकास के दर्पण को उन्होंने आधुनिक भारत की आवश्यकताओं के अुनसार फिर से परिभाषित किया अर्थात प्राचीन काल की संस्कृति को नया रूप में परिभाषित करने वाले मानवता के प्रेमी गुरू रविन्द्र नाथ टैगोर जी हैं। उनका जन्म 6 मई सन् 1861 ई० में बंगाल (कलकत्ता) के एक शिक्षित, धनी तथा सम्मानित परिवार में हुआ था। उनकी शिक्षा का भार उनके पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर के उपर ही रहा। उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने के लिए वे बंगाल अकादमी में भेजे गए। परन्तु वहां के क्रमबद्ध तथा निष्क्रिय शिक्षण से वे बहुत जल्दी उब गए। इस प्रकार तत्कालीन शिक्षा के प्रति उनके हृदय में घृणा उत्पन्न हो गई। उन्होंने अनेक प्रशंसनीय कवितायें, उपन्यास, नाटक लिखे, इससे वे न केवल एक सुप्रसिद्ध कवि, उपन्यासकार, नाटककार, चित्रकार तथा दार्शनिक के रूप में ही प्रसिद्ध हुए अपितु उन्हें ऋषि की संज्ञा से विभूषित करके ''गुरूदेव'' भी कहा जाने लगा।

टैगोर का शिक्षा दर्शन

सभी वस्तुओं का या विचारों का पारस्परिक समन्वय उनके दर्शन का आधार बिन्दु है। प्रकृति के साथ समन्वय, मानवतावादी वातावरण और अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना पर उन्होंने बल दिया। उनके अनुसार, ''शिक्षा मानव को समायोजन करना सिखाती है। टैगोर की शिक्षा दर्शन के तीन मूल भूत आधार हैं, प्रकृतिवाद, मानवतावाद, अन्तर्राष्ट्रीयवाद।

टैगोर का प्रकृतिवाद

टैगोर जी के अनुसार मानव और प्रकृति के बीच एक मूल एकता की भावना होनी चाहिए ताकि बच्चा स्वयं अभिव्यक्ति की शक्ति का विकास कर सके और ऐसा विकास केवल प्राकृतिक वातावरण में ही सम्भव है, कृत्रिम आवरण में नहीं। उनके अनुसार बालक पुस्तकों तथा अध्यापक से अधिक महत्त्वपूर्ण है। बालक का सर्वोत्तम अध्यापक प्रकृति तथा उसका स्वयं का अनुभव है।

आध्यात्मिकता

टैगोर का प्रकृतिवाद ही आध्यात्मवाद के द्वार खोलता है। प्रकृति तथा प्राकृतिक नियमों में ही उन्होंने ईश्वर के दर्शन किए।

टैगोर का मानवतावाद

टैगोर का दर्शन पूर्ण रूप से मानवतावादी है। उनका मानना था कि ईश्वर के दर्शन भी मानवता से किए जा सकते हैं। मानव ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है। इसी कारण बालक ईश्वरीय अवतार है और अध्यापक को उनके लिए बड़े भाई के समान कार्य करना चाहिए।

टैगोर का अन्तर्राष्ट्रीयवाद

इस विश्व एकता के अग्रदूत ने पूर्व और पश्चिम के संस्कारों को एक–दूसरे के नजदीक लाने का प्रयास किया। पूर्वी और पश्चिमी संस्कृति का संश्लेषण करने के लिए उन्होंनें विश्व भारती की स्थापना की।

टैगोर का आदर्शवाद

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886| Web of Science ResearcherIDJTT-1295-2023
Vol. 17 Issue 11, Nov- 2022
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

एक आदर्शवादी के रूप में, उनका विचार था कि प्यार और सार्वभौमिकता के आदर्शों को महसूस करना ही सच्ची शिक्षा है।

शिक्षा जीवन से सम्बन्धित हो

शिक्षा जीवन की समस्याओं और लोगों के साथ गहन सम्बन्ध रखने वाली होनी चाहिए। सांस्कृतिक केन्द्र बिन्दु होने के साथ–साथ आर्थिक रूप से सक्षम बनाना भी शिक्षा का उद्देश्य है।

टैगोर एक शिक्षा शास्त्री के रूप में

एक शिक्षा शास्त्री के रूप में टैगोर का विचार है कि प्रत्येक बालक अपने आप में ईश्वर की अदभुत कृति है और उसे अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए पूर्ण स्वतन्त्रता होनी चाहिए। शिक्षा के उद्देश्य सच्चाई की एकता, बौद्धिक, शारीरिक और आध्यात्मिक पक्षों में पारस्परिक सम्बन्ध और पूर्ण विकास के लिए आत्मा की स्वतन्त्रता प्रदान करना होना चाहिए। मस्तिष्क की स्वतन्त्रता प्रदान करना भी शिक्षा का एक उद्देश्य होता है। इसके लिए बालक को व्यक्तिगत रूप से प्यार प्रदान करना आवश्यक है।

टैगोर की विश्वभारती

टैगोर के विचारानुसार विश्वविद्यालय ज्ञान को संग्रहित करने तथा उसका वितरण करने का मशीनी संगठन मात्र नहीं है। यह विश्वविद्यालय दूसरों को बौद्धिकता व समृद्धता प्रदान करने का एक माध्यम है। अपने इसी विचार से प्रेरित होकर उन्होंने विश्व भारती की स्थापना की जो उनके ज्ञान के प्रति असीमित प्रेम और राष्ट्रीय भाईचारे की भावना का प्रतीक है। भारत की विविध संस्कृतियों और सम्यताओं को शिक्षा प्रदान करने के लिए टैगोर ने एक शान्त ग्राम जीवन की स्थापना विश्व भारती में की ताकि पूर्व व पश्चिमी संस्कृतियों और विचार धाराओं के बीच समन्वय हो सके और मानव मात्र में एकता स्थापित हो सके। संक्षेप में टैगोर की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय मानवतावाद, प्रकृतिवाद, के सिद्धान्तों पर आधारित सुयोग्य व सुसंस्कृत नागरिकों का विकास करना था।

समस्या कथन

''श्री रविन्द्रनाथ टैगोर जी के शिक्षा दर्शन का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में योगदान का एक अध्ययन''।

समस्या का परिभाषीकरण

श्री रविन्द्रनाथ टैगोर जी

''रविन्द्रनाथ टैगोर जी एक महान् शिक्षा–शास्त्री व उच्च कोटि के राजनीतिक थे। टैगोर का जन्म 6 मई 1861 ई० को बंगाल के एक प्रतिष्ठित, धनी तथा सम्मानित परिवार में हुआ। विश्व ने सन् 1913 में इन्हें गीतांजलि के आंग्ल भाषा में अनुवाद करने पर नोबेल प्राईज देकर उनकी योग्यता को स्वीकार किया जो इनकी शिक्षा साहित्य क्षेत्र में योगदान को वर्णित करते हैं।

शिक्षा

शिक्षा शब्द संस्कृत की शिक्षा धातु से बना है जिसका अर्थ है सीखना तथा सीखाना अर्थात शिक्षा सिखाने व सीखने की प्रक्रिया है।

दर्शन

दर्शन वह शास्त्र है जिसमें जीवन और जगत के पूर्ण रूप को तर्क–बुद्धि के आधार पर समझने तथा मानव जीवन के अर्थ और मूल्यों के निर्धारित करने का प्रयत्न किया जाता है।

आधुनिक शिक्षा

आधुनिक शिक्षा का अर्थ है छात्र के शरीर, मन और आत्मा अर्थात छात्र के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का सर्वांगीण एवं सर्वोत्तम विकास।

अध्ययन के उद्देश्य

1. रविन्द्रनाथ टैगोर जी के शैक्षिक विचारधारा के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करना जैसे शिक्षा का लक्ष्य, शिक्षण विधियां, पाठ्यक्रम, अध्यापक, अनुशासन।
2. टैगोर जी के शिक्षा–दर्शन का आधुनिक समाज पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. टैगोर जी का भारतीय शिक्षा प्रणाली में योगदान का अध्ययन करना।
4. विभिन्न शैक्षणिक स्तरों पर शिक्षा में परिवर्तन एवं योगदान का अध्ययन करना।

समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोधकार्य में धन, समय व साधनों को ध्यान में रखते हुए संवैधानिक संशोधन एवं उपलब्धियां, स्वलेखन एवं आत्मकथा आदि पर आधारित तथ्यों का समावेश किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्ता द्वारा टैगोर जी के शिक्षा–दर्शन के शैक्षिक व दार्शनिक विचारों से सम्बंधित पहलुओं का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोध को ऐतिहासिक व वर्णनात्मक विधि को आधार मानकर श्री रविन्द्रनाथ टैगोर जी के शिक्षा–दर्शन का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में योगदान का एक अध्ययन किया गया है।

आंकड़ों के स्त्रोत

वर्तमान विषय दर्शन शास्त्र की प्रकृति पर आधारित है । इसलिए अनुसंधनकर्त्ता भी सबसे पहले प्रकाशित तथा अप्रकाशित अनुसंधानों पर सर्वेक्षण किया गया है व निम्नलिखित प्राथमिक तथा द्वितीयक स्त्रोंतों से आंकड़े एकत्र किये गये हैं।

प्राथमिक स्त्रोत

आंकड़ों का प्राथमिक स्त्रोत स्वयं टैगोर के लिखित विषय, भाषण, आत्मकथा आदि पर आधारित है।

द्वितीयक स्त्रोत

यह अन्य लेखकों के द्वारा सम्बन्धी दर्शन शास्त्र पर लिखित किताबों, दैनिक पत्रों, समाचार पत्रों, समितियों, आयोगों की रिपोर्ट, शोध विषयों, पत्रिकाओं, उपदेशों आदि को सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त द्वितीयक स्त्रोंतों में शिक्षा का विश्वज्ञान कोष, रविन्द्र नाथ टैगोर के शिक्षा–दर्शन व शैक्षिक विचारों से सम्बन्धित पी0एच0डी0 थिसिस और नैट सम्मिलित किया गया है।

निष्कर्ष

श्री रविन्द्र नाथ टैगोर जी भारत के ऐसे महान दार्शनिक हुए हैं, जिन्होंने अपनी विचार धारा से न केवल राष्ट्र अपितु सम्पूर्ण विश्व को सुरभित किया। ये महान शिक्षा शास्त्री भी रहे हैं और अपने विचारों से सम्पूर्ण शिक्षा जगत को आलोकित किया है। यद्यपि शिक्षा सदैव ही दर्शन से प्रभावित रही है। परन्तु आज शिक्षा अपने मूल्यों से पथ भ्रष्ट होती जा रही है। डॉ० राधाकृष्णन के शब्दों में, 'भारत सहित सारे संसार के दुःख का कारण यह है कि शिक्षा केवल बौद्धिक अभ्यास बन कर रह गई है और नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों की प्राप्ति का साधन नहीं रही।

इस प्रकार प्रस्तुत शोध का अध्ययन करने के बाद शोधकर्त्ता के मन में निम्न बाते उठती है–

1. शिक्षण विधियों में टैगोर जी ने भ्रमण के समय पढ़ना, वाद–विवाद तथा प्रश्नोतर–विधि, क्रियाविधि आदि विधियों को महत्त्व दिया है।
2. सच्चे दिल से काम करना व उस कार्य के प्रति श्रद्धा रखना व सार्वभौमिक प्यार ही शिक्षा का लक्ष्य है।
3. शिक्षा स्नेह व प्रेम की अनुभूति है तथा शिक्षा का उद्देश्य समूचे जीवन को समझना है।
4. मानव व प्रकृति में मौलिक एकता है।
5. बालक की शिक्षा प्रकृति की गोद में होनी चाहिए । प्रकृति की गोद में शिक्षा प्राप्त करते समय बालक को सामाजिक सम्पर्क स्थापित करने के अधिक से अधिक अवसर दिये जायें।
6. मानव जीवन के शारीरिक, मानसिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक सभी पक्षों को सामंजस्यपूर्ण ढंग से विकसित करने के लिए व्यापक क्रिया प्रधान पाठ्यक्रम होना चाहिए।
7. ईश्वर एक है तथा उसने मनुष्य और प्रकृति की रचना की है।
8. शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह बालक को जीवन तथा विश्व के मिलन से पूर्णतया अवगत कराये तथा दोनों के बीच में सन्तुलन स्थापित करें।
9. शिक्षा प्राप्त करते समय बालक को स्वतन्त्र वातावरण मिलना परम आवश्यक है।
10. प्रकृति ही बालक की शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ साधन है।
11. अन्त में हम कह सकते हैं कि टैगोर जी के युग में उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान देकर बहुत से शैक्षिक सुधार आधुनिक भारतीय शिक्षा में किए।

भावी शोध हेतु सुझाव

अन्त में शोधकर्त्ता इस बात की आवश्यकता महसूस करता है कि भविष्य में शोधकर्त्ताओं को इस विषय पर आगे शोध कार्य करने के लिए सुझाव प्रदान किये जाएं। इस विषय क्षेत्र में आगे शोधकार्य करने के लिए विभिन्न दार्शनिकों का वर्तमान शिक्षा पद्धति को योगदान जैसे उपविषय लिए जा सकते है। उदाहरण के लिए – पूर्व शिक्षा शास्त्री जैसे दयानन्द सरस्वती, डॉ० राधाकृष्णन, महात्मा गांधी आदि। प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित सुझाव निम्नलिखित हैं :–

1. रविन्द्र नाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन का तत्कालीन शिक्षा दार्शनिकों से तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
2. रविन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन का पी०एच०डी० स्तर पर भी अध्ययन किया जा सकता हैं
3. प्रस्तुत समस्या का विस्तार से विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. इस शोध का आधुनिक भारतीय समाज के सन्दर्भ में भी अध्ययन किया जा सकता है।
5. शिक्षा दार्शनिक के रूप में टैगोर जी का मूल्यांकन किया जा सकता है।